ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

REVIEW OF RESEARCH

संजीवकृत "धार"उपन्यास :- एक चिंतन

प्रा.डॉ.जाधव युवराज इंद्रजित
आदर्श कॉलेज उमरगा ता.उमरगा , जि.उस्मानाबाद.

हिंदी साहित्य के चर्चित साहित्यकारों में संजीवजी का नाम आदिवासी, दलित, उपेक्षित ओर अछूत लोगों की त्रासदी को वाणी देनेवाले साहित्यकारों में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। संजीव एक सशक्त कहानीकार, उपन्यासकार, कवि तथा गदय लेखन के हस्ताक्षर रहे है। उनका साहित्य मूलत: सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला साहित्य रहा है। उनके उपन्यासों, कहानियों में आदिवासी दलित, उपेक्षित, अछुत लोगों के साथ-साथ किसान, भूमिहीन, मजदूर मुख्य रहे है। उनके साहित्य में मानवव्दारा मानव के विनाश, उत्पीड़न, दमन, संस्कृति का विकृतरुप, मूल्यहीनता की राजनीती, सामाजिक कुरुपता, आर्थिक विषमता, समाज में फैला भ्रष्टाचार आदि का वर्णन मिलता है। आज समाज में जो घटित हो रहा है उनका पर्दापाश करना उनका प्रमूख लक्ष्य रहा है। आज भूमंडलीकरण के दौर मे ं या खेल-बाजावाली सांप्रदायिकतावाले माहौल में आम आदमी की संवेदना को वाणी देने का काम कर रहे है। उनका ध्यान वर्तमान जन-जीवन की त्रासदी तथा मनुष्य प्राणी मात्रा की जिंदगी की तमाम बिडंबना तथा त्रासदी, संवेदना को व्यस्त करती है। वैसे देखा जाए तो संजीव का साहित्य मे गरिबी, शोषण, मजबूर मजदूर, आदिवासियों की संवेदना, शोषितों का वर्णन, मजदूरों की बेबसी, पतन, बेरोजगारी की आग, शोषण का नंगा-नाच स्पष्ट होता है ।

संजीवजी ने जो देखा भोगा, अनुभव किया उसी विचारों को अभिव्यक्ति देने हेतु नौ कहानी संग्रह, सात उपन्यास तथा एक नाटक के माध्यम में व्यक्त किया है। उपर्युक्त रचनाओं के माध्यम से कहा जाए तो संजीवजी एक मानवतावादी साहित्यिक के रुप में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय देते है। उनकें कहानी साहित्य में आम आदमी की त्रासदी, मजदूरी, बेकारी की दुर्दशा, शोषण, पूँजीपती वर्ग की नियती, शिक्षित मध्यम वर्ग की संवेदना, असफल प्रेम, धार्मीक आस्था अंधश्रध्दा, धर्मान्तरण, गरीबी की संवेदना, स्वार्थान्ध सत्ताजीश, उददयोगपतियों की दोगली सत्तधीशनीति आँचलिकता, आदिवासियों की समस्याएँ तथा उनका होने वाला शोषण आदि को केंद्र में रखकर कहानियॉ लिखी गयी है। तो उनके उपन्यासों में, कोयला की समस्या, औपचारिकता, जातीवाद, सामंतीवादी व्यवस्था का रौद्ररुप, अनैतिक कुकर्म ऐयाशी लोगों की मानसिकता तथा स्त्रीयों की स्थिति और उनकी वैयक्तिक समस्या को केंद्र में रखकर लिखा है।

संजीव हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक अग्रेसर साहित्यकर माने जाते है। समकालिन जनवादी उपन्यास में बेहद संवेदनशील उपन्यास के रुप में सामने आते है। उनके उपन्यासों मे कामलांचल, जातिवाद, सामंतीवाद, क्रुरता समाज में फैली अनैतिकता, दुष्कर्मो का चित्र उपस्थित करता है। संजीव ने जीवन की अंदरुनी कायरता एवं उनके प्रति मालिकों का अनुचित व्यवहार, कोयला खादान, कारखानों मे काम करनेवाले आम जन का शोषण, दलालों की कुटिलता तथा सामाजिक समस्याओं का व्यक्त कहते है। संजीव उपन्यास लेखन के संबंध स्वयं करते है कि "कई कथानक ऐसे होते है जिनके लिए चादर छोटी पडने लगती है। तब तक कुछ उपन्यास पढ़ चुके थे। जासूसी से लेकर फुट पाथी और प्रेमचंद, विश्वंभरनाथ शर्मा, कौशिक, वृंदावनलाल वर्मा, भगवतीचरण वर्मा और बंगला उपन्यास ।जीवन वहॉ अपेक्षाकृत ज्यादा पूर्णता में खिला हुआ महसूस विद्या को साधा जाय तो साहित्य कला और ज्ञान-विज्ञान के विविध रुप यथावश्यक उसमें समाहित किये जा सकते है।[१]" अर्थात संजीव के उपन्यासों पर प्रेमचंद जैसे विद्वानों का प्रभाव रहा है उनके उपन्यासों में "धार" एक महत्वपूर्ण तथा आदिवासियों की मानसिकता तथा उनकी संघर्ष गाथा को वाणी प्रदान करते है। पूंजीवादी व्यवस्था, शोषण की नीति को स्पष्ट करते है।

"धार" संजीवजी का महत्वपूर्ण तथा परिवेशगत वास्तविकता को स्पष्ट करनेवाला उपन्यास है। कोयलाग्रस्त क्षेत्रों मे मजदूरी करनेवालों की वास्तविकता, श्रमजीवी लोगों की कथा, नारी समस्या, त्रासदी, संवेदना तथा संथाली समाज व्यवस्था, उनके रहन-सहन की विवेचना हुअी है। "धार" उपन्यास में मूलत: संथाली आदिवासियों का सामाजिक चित्रण तथा शोषित समाज की यथार्थवादी मनोवृत्ति व्यक्त होती है। इस उपन्यास में मैना की कथा, व्यथा, त्रासदी, भौगोलिक परिस्थिती ही वास्तविकता का चित्र उपस्थित करता है। साथ ही धार्मिक मनोवृत्ती में पिसते आदिवासी समाज की अज्ञानता, अपनढ, समाज में फैली रीति, जादूटोना, बलीप्रथा, मंत्र - तंत्र- जैसे रुढीवादी त्रासदी का पर्दाफाश हुआ है। आदिवासियों का शोषण अंधश्रध्दा के कारण ही होता है यह संजीवजी का मानना है "धार" उपन्यास में धार्मिक स्थिती का अंकन काफी मात्रा में हुआ है। इस संबंध मे संजीवजी लिखते है कि

"धार" उपन्यास में ऐसा कोई कोना न स्पष्ट हुआ हो जो विविध समस्याओं से घिरा न हो। "धार" में समकालिन सभी समस्याएँ व्यक्त होती है आज के भूमंडलीकरण के इस युग में अनेक समस्याए इतनी मात्रा में बढी है कि इन्सान स्वयं समस्याओं की श्रृंखला में व्यथित होता चला गया है। इसलिए "धार" उपन्यास में कोयला से परेशान संथाल जाति जो वाद्य शक्तीयों के शोषण से अत्याधिक त्रस्त मिलते है। आम आदमी को जिंदगी कारखानदारों से शोषित फटेहाल जीवन जीना पडता है। जिसका वर्णन संजीवजी कहते है की ठेकेदार अब भी ढोर-डागरों की तरह, उन्हे काम कराने हॉककर ले जाते है और चूसकर छोड देते है। माफिया अबभी उनसे अमानुषिक श्रम कराते है, और जरा-जरा सी बात पर पीटते है।"[२] उस प्रकार ठेकेदार, कारखानदार लोग सस्ते में मजदूरों को जानवरों की तरह काम करवाते है आदिवासियों का शोषण करते है। और आदिवासी मजबूर होकर पापी पेट को भरने के लिए बाल-बच्चों सहीत कोयला खदानों में मुफ्त में कम दाम में मजदूरी कर पेट की आग बुझवाते है। साथ ही संथालों के साथ उनका रवैया निर्दयी और कठोर ही रहा है। उन्हे दिन-रात मेहनत कर दो वक्त की रोटी भी बडी मुश्किल से मिलती होती। स्त्रीयों, बच्चों, लडकियों को डरा धमकाकर काम पर मुफ्त में लगाते है क्योंकि वे जानते है कि आदिवासी समाज का दायरा ही सीमित है। वे ठेकेदारों का विरोध नही कर सकते। इसलिए संथाली ठेकेदारों, जमीनदारों का विरोध नही करते इस संबंध में इस उपन्यास की नायीका मैना आक्रोश तथा लोगों के अभावग्रस्त जीवन की त्रासदी को स्पष्ट करती हुई कहती है कि " खेतखतार, पेड रुख, कुँआ, तालाब हम और हमारा बाल बच्चा तक आज तेजाब में जल रहा है। पहले हम चोरी का चीज नहीं जानता था भीख कभी नही माँगी, चुगली दलाली कभी नई किया इज्जत कभी नही बेचा, आज हम सब करता, आदत पड गया है, बल्कि कहे इसके बिना गुजारा नही अर्थात आदिवासियों की इज्जत अब खूलेआम निलाम हो रही है। वे आज पापी पेट के लिए चोरी, दलाली, देह बेच रही है। आजादी के सत्तर साल बाद भी हमे लगता है उनकी समस्याए, निर्धनता, आर्थिक समस्या, तथा धन के अभाव के कारण उनकी दिशाएँ, तितर-बितर हुई है।

"धार" उपन्यास में काम करनेवाली नारियॉ अपनी घर गृहस्थी चलाने हेतू, अवैध कोयला निकालकर बेचती है और अपनी जीविका चलाती हुई दिखायी देती है। इस संबंध में संजीवजी लिखते है कि, सस्ता और इकरात ढुँढने के क्रम में वे कई दुकानों से भिखमंगे की तरह दुर-दराए गए। शाम हो गयी, तब जाकर भर पाये उसके थैले, आटा, मोठा और थोड़ा महीन चावल के अलग-अलग पॅकेट, सस्ती किस्म की दाल, नमक मसाला, बची खुची आधी सडी सब्जियॉ, आलू सीता के छापेवाली चटक साडी, देशी ठर्रे की एक बोतल अपने लिए और बासी जलेबियाँ बच्चों के लिए।[४] इस वाक्य से स्पष्ट होता है कि संथालो की संवेदना उनके खान-पान से लेकर बाल बच्चो के लिए कपडे आलू, चावल जैसी वस्तुओं के लिए इजजत के साथ-साथ चोरी भी करनी पडती है। हाट-बाजार में स्वाभीमान बेचकर भीख माँगना पडता है। पेट की आग बुझाने के लिए सडी बॉसी सब्जियों के लिए तरसना पडता है। अर्थात मजदूर होकर चोरी करनी पडती है। यहाँ लेखक संजीवजी आदिवासियों की बेकारी, गरीबी , विस्थापना की समस्या को व्यक्त करते है। इतना ही नही "धार" उपन्यास में महेंद्रबाबू जैसे पूँजीपती ठेकेदारों, दलालो व्दारा तेजाब जैसे कारखानों में काम करने के बाद भी उन्हे मजदूरी नही मिलती। हर तरह से उन्हे नोंचा जाता था। उनका दैहिक शोषण के साथ-साथ आर्थिक एंव शारीरिक शोषण का सिलसिला चलता रहता है। धनकमाने की लालसा के कारण आदिवासियों की जमीन और जिंदगी दोन्हों बरबाद हो जाती थी। पैसा उनके लिए भगवान बन जाता था। पेसे के लिए वे कुछ भी करने के लिए तेयार हो जाते थे। इस संबंध में संजीव लिखते है कि चार-चार महीना का तनख्वाह रोक के रखा, पूरा बॉसगाडा में जहर घोल दिया सब को लँगडा, लुला, अपाहिज और रोजी बना दिया।[५] कोयला खादान में काम करनेवाले आम-आदमी तथा आस-पडोस की बस्तियॉ धूएँ में घिरकर बाल बच्चों का भविष्य निरस कर रही है। धूएँ मे जलती बस्तियॉ दमघोटू वातावरण से परेशान, आम जनता, बच्चो बुढे नर-नारी, रोगों से परेशान है संजीव "धार" उपन्यास मे एक जगह लिखते है कि, " न दिन है न रात, दोनों की दहलीज पर संथाल परगना का पूरा नंगा इलाका, घायल गर्राते सुअर की तरह पडा है। नंगी अधनंगी पहाडियॉ, जहाँ-तहाँ, खडे शाल महुए, खजूर और ताड के पेड की झाडियॉ, बंजर धरती, सुखती नदियॉ, सुखते हुए, तालाब भयंकर पोखरियॉ खादें जहॉ-तहॉ सोये पडे मुर्दे से लोग। अर्थात संजीव का मानना है कि संथाल परगना के आदिवासी वर्ग की दशा सोचनीय , दयनीय तथा अर्थहीनता से गुजर रही है। इसके साथ-साथ आदिवासियों मे फैली अंधश्रध्दा, अशिक्षित अनपढ, परम्पराप्रिय मानसिकता के कारण अपनी जड से चिपक कर जी लेते है। धार उपन्यास में संजीवजी कोयलाचल की परिस्थितियों के साथ -साथ सामंतीवाद, पुँजीवाद, वर्गभेद नारियों का शोषण, ठेकेदारों की क्रुरता, अनैतिक दुष्कर्मो को वाणी देते है। धार उपन्यास में आदिवासियों की गरीबी गुलामी, भुखमरी की त्रासदी, समाज में वर्गगत, जातीगत, धार्मिक अभावग्रस्त गंदगी, नारी देहकर खूला चलनेवाला व्यापार, पैसे के लिए लडकियों को बेचना, बालविवाह जैसी समस्याओं का पर्दाफास संजीवजी ने किया है। संजीव जी धार उपन्यास में मौलिक और समाज के आदिवासियों की मानसिकता त्रासदी मूल्यविघटन, विश्वासघात, मजबूरी का फायदा उठाकर जीनेवाले नेता, ठेकेदारों की वास्तविकता को स्पष्ट किया है। संजीवजी खादानों में काम

करनेवाले आदिवासियों का स्थिती पर, प्रशासनिक व्यवस्था तथा पूंजीवादी, ठेकेदार, पुलिसवाले अधिकारी के कारण उनका जीना हराम कैसे होता है तथा स्वयं को कैसे आंतंकित, शोषित, अभावग्रस्त असुरक्षित महसूस करते है इसका चित्रण है। इस उपन्यास में एक जगह संजीव लिखते है कि हम अपना कोई पता ठिकाना नई - कामे नई इस रख छोटा है? कोयला के खजाने पे हम रहता फिर भी कंगाल ? कब तक चलेगा आयसा।" [७] माफिका इससे स्पष्ट होता है कि, दिन रात खदानों में काम करने के बाद भी उनके नशीब मे गरीबी, भूखमरी, अभावग्रस्तता, नारियों का वेश्या व्यवसाय करना, व्यसनाधिनता, बेरोजगारी पीछा नही छोडती।

संदर्भ

१.	हंस पत्रिका	१९९९	पृ १३३
२.	धार	संजीव	पृ १२९
३.	धार	संजीव	पृ ५६
४.	धार	संजीव	पृ ८९
५.	धार	संजीव	पृ ५६
६.	धार	संजीव	पृ ४१
७.	धार	संजीव	पृ ५६